Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 3, May-2018, ISSN 2230-7540

हिंदी साहित्य में आत्मकथाओं का विकास एवं उनकी विशेषताएं

Mamatha Sharma*

M.A. Hindi, B.Ed., Net Qualified

सांराश – *साहित्य की अन्य विधाओं की भान्ति आत्मकथा एक महत्त्वपूर्ण विधा है, जिसमें रचनाकार आत्मावलोकन करते हुए स्वयं अपने जीवन का मूल्यांकन करता है । अतः सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि आत्मकथा लेखक के भोगे हुए जीवन का स्वयं किया गया विवेचन एवं विश्लेषण है । इसमें उपन्यास की सी रोचकता एवं इतिहास की सी प्रमाणिकता होती है । इसमें लेखक अपने जीवन की सभी सच्चाइयों को निःसंकोच व्यक्त करता है। हिन्दी साहित्य में लिखी गई सर्वप्रथम आत्मकथा 'अर्द्धकथानक' है, जिसे जैन कवि श्री बनारसीदास ने सन् 1641 में लिखा था । इसके पश्चात् भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी की अधूरी आत्मकथा 'कुछ आपबीती-कुछ जगबीती का उल्लेख आता है । इस शोध में हम हिंदी साहित्य में उनकी आत्मकथाओं के विकास एवं उनकी विशेषताओं के बारे में विश्लेषात्मक अध्ययन करेंगे।*

----------x----------

प्रस्तावना

साहित्य समाज का दर्पण है। आधुनिक काल का हिन्दी गद्य साहित्य पर्याप्त समृद्ध है। गद्य साहित्य अनेक विधाओं से विकसित हो रहा है। इन विधाओं में जीवनीपरख विधाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इनमें जीवनी, संस्मरण, डायरी, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, यात्रा-वृत्तान्त तथा आत्मकथा है। आत्मकथा एक कलात्मक एवं मानवीय विधा है। आत्मकथा का स्वरूप व्यक्ति केन्द्रित होता है। आत्मकथा में लेखक स्वयं नायक होता है। सम्पूर्ण कथा उसके इर्द-गिर्द घुमती है। आत्मकथा गद्य का वह रूप है जिसमें लेखक अपने जीवन-संघर्ष, उतार-चढ़ाव, गुणों-अव गुणों, सफलता-असफलताओं, पारिवारिक परिस्थितियों, परिवेश, वंश, योग्यता, कठिनाइयों, उपलब्धियों एवं अपने प्रेरणा स्रोतों आदि का स्वयं निःसंकोच भाव से यथार्थ रूप में कलात्मक लेखन करता है।

आज हिन्दी साहित्य में आत्मकथा हिन्दी की सभी विधाओं से रोचक एवं सजीव विधा है, क्योंकि अन्य सभी विधाओं में साहित्यकार व्यक्तिगत नीतियों अथवा सामाजिक समस्याओं का ही वर्णन करता है, जबकि आत्मकथा में वह स्वयं के नितान्त निजी व आत्मिक तथ्यों का ही उद्घाटन करता है। आत्मकथा व्यक्ति का वह अन्तः साक्ष्य है, जो उसकी सम्पूर्ण जीवन-यात्रा का प्रमाणिक, यथार्थपूर्ण एवं आत्मिक दस्तावेज प्रस्तुत करती है।

आत्मकथा

आत्मकथा विधा के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न पाश्चात्य एवं भारतीय कोषों तथा विद्वानों ने अपनी-अपनी परिभाषा प्रस्तुत की है ।

"आत्मकथा अंग्रेजी के 'Auto-Biography' (ऑटोबायोग्राफी) का हिन्दी रूपान्तरण है। यहाँ Auto का अर्थ 'आत्मा' और 'Biography' का अर्थ 'जीवनी' है। इस प्रकार से आत्मकथा का अर्थ हुआ 'सम्बद्ध व्यक्ति द्वारा अपने जीवन की कहानी स्वयं लिखी जाना।' अथवा यह भी कह सकते है कि 'स्व' के जीवन पर स्वरचित कथा ही आत्मकथा होती है।"

1. आधुनिक हिन्दी शब्दकोश में "आत्मकथा शब्द 'स्त्री लिंगी' संज्ञा में दिया गया है, तथा उसका अर्थ 'स्वयं' द्वारा लिया गया जीवनचरित्र, जीवनी, आपबीती, आत्मकहानी"

2. आदि विकल्प स्वरूप लिया गया है। नूतन पर्यायवाची एवं विपर्याय कोश में आत्मकथा का अर्थ "आत्मचरित्र, आत्मवृत्त, आत्मवृत्तांत, आप-बीती, जीवनी, स्वकथा" आदि के रूप में लिया गया है ।

'आत्मकथा' शब्द मूलतः अंग्रेजी शब्द 'ऑटोबायोग्राफी' (Autobiography) के हिन्दी अनुवाद के तौर पर स्वीकृत किया गया है। भारतीय संस्कृत साहित्य में 'आत्मवृत्तकथनम' और 'आत्मचरितम्' शब्द अवश्य मिलते है। जो आत्मकथा के अर्थ में स्वीकृत शब्द हैं। ऑटोबायोग्राफी (Autobiography) के लिए हिन्दी में अनेक शब्द प्रचलित है – आत्मकथा, आत्मवृत्त, आत्मगाथा, आत्मचरित, आत्मचरित्र, आत्मचरित्र-चित्रण, स्व-कथा, आत्म-जीवनी, आत्मवृत्तांत, आत्मचरित रचना, आत्मचरित जीवन, आत्मनेपद, आत्मकहानी, आपबीती, मेरी कहानी, राम कहानी, अपनी कहानी, जीवनयात्रा, अपनी खबर, जीवन कहानी आदि। लेकिन इन सभी शब्दों के मध्य 'आत्मकथा' समस्त पद ने अपना विशिष्ट स्थान बनाया है और ऑटोबायोग्राफी (Autobiography) के अनुवाद रूप में 'आत्मकथा' शब्द को व्यापक स्वीकृति मिली है।

राजनैतिक आत्मकथाएँ:

हिन्दी साहित्य में कुछ ऐसी आत्मकथाएँ आती है जो राजनैतिक पुरुषों द्वारा लिखी गयी है। राजनैतिक पुरुषों में महात्मा गाँधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू एवं डॉ. राजेन्द्र प्रसाद प्रमुख है। राजनैतिक नेताओं का जीवन भी संघर्ष का जीवन रहा है। उत्थान और पतन उनके जीवन के दो समान महत्त्वपूर्ण पक्ष होते है। भाग्य का झकोरा उन्हें किस समय किस पक्ष की ओर ले जाकर पटकता है, यह कुछ नही कहा जा सकता। इन लोगों की आत्मकथाओं का सौन्दर्य भाग्य के उसी उत्थान और पतन की कहानी को सच्चाई से व्यक्त करने में निहित करता है। इन महापुरुषों द्वारा लिखी हुई सभी आत्मकथाएँ इसी श्रेणी में आती है।

धार्मिक आत्मकथाएँ:

कुछ धार्मिक पुरुषों द्वारा लिखी हुई आत्मकथाएँ भी प्राप्त होती है। हरिभाऊ उपाध्याय की 'साधना के पथ पर' एवं भवानीदयाल संन्यासी की 'प्रवासी की आत्मकथा' इसी श्रेणी में आती है । संसार में बहुत से महान व्यक्ति हुए है जो अपने जीवन के आरम्भिक काल में कुछ अधिक उच्छंखल रहे, किन्तु किन्ही विशेष प्रेरणा और परिस्थितियों के फलस्वरूप उनके जीवन की गतिविधि सहसा बदल गई आत्मकथाओं में हमें आत्मनिवेदन और आत्मविवेचना के साथ-साथ उन परिस्थितियों और घटनाओं का मार्मिक चित्रण भी मिलता है, जिन्होंने उनके जीवन की गतिविधि बदलने में योग दिया और उनके जीवन को सफल बना दिया । ये सभी आत्मकथाएँ इसी कोटि की है।

साहित्यिक आत्मकथाएँ:

साहित्यिक व्यक्तियों द्वारा लिखी गई आत्मकथाएँ साहित्यिक आत्मकथा की कोटि के अन्तर्गत आती है। यहाँ साहित्यिक व्यक्ति से अभिप्राय उन व्यक्तियों से है जिन्होंने हिन्दी के विकास में अपनी कृतियों द्वारा योगदान दिया है । ऐसी श्रेणी में कवि, कथालेखक एवं आलोचकगण आते है।

आत्मकथा की विशेषताएँ

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर आत्मकथा की स्वरूपगत विशेषताएँ एवं तथ्य हमारे सामने उभरकर आये है, ये निम्नलिखित है -

1. आत्मकथा स्वयं के द्वारा लिखा गया स्वयं के जीवन का इतिहास है।
2. लेखक के आत्मानुभवों की प्रस्तुति होने व अन्तर्जगत् से सम्बन्धित होने के कारण यह एक आत्मपरक विधा है ।
3. स्व के जीवन का इतिहास लिखते समय लेखक (सामाजिक प्राणी होने के कारण) यथासम्भव बाह्य परिवेश तथा स्वयं से सम्बन्धित अन्य व्यक्तियों का भी चित्रण आत्मकथा में करता है। इस प्रकार वह अन्तर्जगत् तथा बाह्य जगत् में सन्तुलन बनाये रखता है।
4. आत्मकथा में लेखक अपने सम्पूर्ण जीवन का विवरण ने देकर कुछ विशेष अथवा चुनिन्दा घटनाओं को, जो उसके व्यक्तित्व के विकास में सहायक हुआ करती है, क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करता है।
5. आत्म-चरित लेखक अपनी आयु की अन्तिमावस्था में मानसिकता के परिपक्व होने पर लिखता है।
6. आत्मकथा लिखने में लेखक के विगत जीवन की स्मृतियां मुख्य रूप से सहायक हुआ करती है।
7. स्वयं भोक्ता होने के कारण आत्मकथाकार अपने जीवन की घटनाओं को सत्य एवं ईमानदारी के साथ प्रस्तुत करता है।
8. यह सत्य ऐतिहासिक सत्य ने होकर लेखक का अनुभवगत सत्य हुआ करता है।

www.ignited.in

9. अपने जीवन के रहस्यों को ईमानदारी से पाठकों के समक्ष रखने के लिये तटस्थ दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

10. यह नायक के सम्पूर्ण विवेचन का सुदृढ़ आधार है।

11. अपने मनोभावों को परखकर प्रकाशित करने का उपक्रम है।

12. प्रौढ़ता की प्राप्ति के बाद अतीत की पुनरावृत्ति है।

13. आत्मेतर पात्रों का प्रायः "आत्म" में अन्तर्भाव हो जाता है।

14. आत्मकथा दर्पण के समान स्पष्ट, सत्य, निश्छल, सहज, सरल, निर्भीक अभिव्यक्ति है।

15. यह विधा व्यक्तिगत अनुभवों, अनुभूतियों व संवेदनाओं की त्रिवेणी है। निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि आत्मकथा में व्यक्ति के जीवन-संघर्ष, वैयक्तिकता, आत्मोद्घाटन, आत्मविश्लेषण आदि का यथार्थ एवं प्रमाणिक वर्णन होता है।

आत्मकथा गद्य साहित्य की अत्यन्त नवीन विधा है। इतिहास गवाह है कि भारतीय परम्परा आत्मप्रचार की अपेक्षा आत्मगोपन की और अधिक उन्मुख रही है। आत्मकथा साहित्य के संकेत हमप्राचीन काल में संस्कृत के साहित्य से मिलने आरम्भ हो गए थे, परन्तु आत्मकथा साहित्य का जन्म आधुनिक काल में ही हुआ है। संस्कृत के प्राचीन साहित्यकारों की आध्यात्म के प्रति रूचि होने के कारण उस काल में इस विधा के उदाहरण अत्यल्प है, फिर भी इस प्रकार की रचनाओं का सर्वथा अभाव नही रहा। इसके बीज हिन्दी से पूर्व संस्कृत, पाली तथा अपभ्रंश भाषा साहित्य में भी विद्यमान है, जिन पर पृथक-पृथक विचार करना असंगत ने होगा।

प्राचीन संस्कृत साहित्य में आत्मकथात्मक संकेत

संस्कृत साहित्य में सर्वप्रथम कवि माघ ने 'शिशुपाल वध' की रचना की थी। इसमें उन्होंने अपना तथा पितामाह का परिचय दिया है। इसमें कवि ने अपने वंश का गौरव-गान भी किया है। इसी प्रकार कवि भट्टि ने अपना परिचय देते हुए कहा कि मैने श्रीधर के द्वारा शासित वल्लभी में भट्टि काव्य की रचना की है। श्रीधर सेन ने इन्हें कुछ भूमि दान में दी थी। इस बात का उल्लेख एक शिलालेख में मिलता है । कवि भट्टि वल्लभी के शासक द्वारा प्रशंसित थे। इसके पश्चात् महाकवि बाण में आत्मकथा की प्रवृति मिलती है। बाणभट्ट द्वारा रचित 'हर्षचरित' और 'कादम्बरी' दोना में ही उन्होंने अपने जीवन की कुछ घटनाओं का उल्लेख किया है। इसमें इनके बचपन, देशाटन, परिवार एवम् इनकी ज्ञान-पिपासा का वर्णन है। 'हर्षचरित' को गद्यमय चरित प्रधान ग्रन्थ कहा गया है। इसमें सुप्रसिद्ध साहित्य मनीषी की बहुमुखी प्रतिभा की झलक दिखाई देती है। महाकवि बाण के पश्चात् कवि हर्ष ने 'नैषध-चरित' में अपने विषय में बहुत कुछ लिखा है। प्रत्येक सर्ग की समाप्ति के श्लोक में इन्होने अपना नाम 'श्री हर्ष' पिता का नाम 'श्री हरि' तथा माता का नाम 'भामल्ल देवी' बताया है। इनकी जन्मभूमि कश्मीर थी। महाकवि श्री भवभूति ने 'महावीरचरित' की रचना की। इन्होने अपना पर्याप्त परिचय अपनी कृतियों के प्रारम्भ में दिया है। कवि का पहला नाम श्री 'नीलकंठ' है। इनके कंठ में देवी सरस्वती का विलास था। इनके जन्म के प्रथम दिन से ही इनके चारों ओर सरस्वती की उपासना का वातावरण रहता था। इनका जन्म आठवी शती के प्रथम पाद में हुआ था। इस प्रकार संस्कृत साहित्य मआत्मकथा के जो छुटपुट विवरण मिलते है, वे आत्मकथा विधा की पूर्ति नही करते, फिर भी इन विवरणों से इतना तो स्पष्ट है कि उस काल में भी स्वयं को व्यक्त करने की इच्छा विद्यमान थी।

आधुनिक काल में आत्मकथा

आधुनिक युग में भारत में अंग्रेजी का शासन होने के कारण भारतीय जनता पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव पड़ने लगा। इस युग में राष्ट्रीयता की भावना का विकास होने लगा। इसी कारण हिन्दी साहित्य में भी राष्ट्रीयता की भावना की अभिव्यक्ति होने लगी। हिन्दी साहित्य में भी पद्य के साथ-साथ गद्य का भी विकास हुआ। इसी समय साहित्य में नई विधाओं आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, डायरी, यात्रा वृत्तान्त, पत्र आदि का आगमन हुआ। यह काल आत्मकथा लेखन के लिए काफी समृद्ध रहा है। इस काल की आत्मकथाओं को चार भागों में बाँटा जा सकता है।

पूर्व भारतेन्दु एवम् भारतेन्दु युग में आत्मकथा

यह काल हिन्दी आत्मकथा साहित्य के उद्भव और विकास का काल है। अध्ययन की दृष्टि से इस काल की आत्मकथाओं को दो भागा में बाँटा जा सकता है।

द्विवेदी युग में आत्मकथा

द्विवेदी युग हिन्दी आत्मकथा साहित्य का उन्नयन काल है। इस युग का नामकरण आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम के आधार पर किया गया है। द्विवेदी जी आत्मकथा के महत्त्व

को भली-भाँति समझते थे। इन्होंने साहित्यकारों को आत्मकथा लिखने के लिए प्रेरित किया। इस युग में मानवतावादी विचारधारा स्थापित हुई। इसी भावना से प्रेरित होकर इस युग के साहित्यकारों ने स्वयं के व्यक्तित्व को जन-जन तक पहुँचाने का सफल प्रयास किया। इस काल के लेखकों ने समष्टि के लिए व्यष्टि के उत्सर्ग की भावना पर बल दिया।

छायावादी युग में आत्मकथा

छायावादी युग में साहित्य की सभी विधाओं का विकास हुआ। हिन्दी गद्य साहित्य में अन्य विधाओं के साथ आत्मकथा साहित्य ने भी बहुत उन्नति की। इस समय के आत्मकथाकारों ने सामाजिकता के स्थान पर वैयक्तिक अनुभूतियों को स्थान दिया। छायावादी युग के आत्मकथाकारों ने सामाजिक बन्धनों को तोड़कर पश्चिम के स्वच्छन्दतावादी विचारों को ग्रहण किया।

छायावादोत्तर युग में आत्मकथा

छायावादोत्तर युग में आत्मकथा साहित्य ने बहुत प्रगति की है। इस युग में साहित्यकारों के साथ-साथ अनेक विशिष्ट व्यक्तियाने भी अपनी आत्मकथाएँ लिखी है। आज के युग में बहुत से व्यक्ति स्वयं को समाज के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहते है। इस प्रस्तुति का एकमात्र साधन आत्मकथा है। इस युग में आत्मकथा साहित्य ने परिणाम और गुणवत्ता दोनों दृष्टियों में खुब उन्नति की है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि साहित्य और व्यक्ति का सम्बन्ध आदिकाल से चला आ रहा है और व्यक्ति सदैव ही अपनी भावनाओं और विभिन्न जीवनानुभवों की शाब्दिक अभिव्यक्ति के लिए आकुल रहा है। जब व्यक्ति प्रौढ़ावस्था में अपने विगत जीवन की स्मृतियों से व्यथित हो उन्हें शब्द-बद्ध करना चाहता है तो उसका प्रतिफलन आत्मकथा के रूप में होता है। आत्मकथा आज एक स्वतन्त्र विधा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी है और यही कारण है कि आधुनिक युग में इस विधा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस अध्याय में आत्मकथा का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसकी विभिन्न विद्वानों द्वारा वर्णित की गयी परिभाषाओं पर विचार विमर्श करके उसकी विशेषताएँ, उपकरण व साधन, प्रकार, तत्त्व व उसकी गद्य की नवीन विधाओं से तुलना की गई है। अतः कहा जा सकता है कि आधुनिक काल से पूर्व हिन्दी आत्मकथा परम्परा भले ही क्षीण हो किन्तु आधुनिक काल में हिन्दी आत्मकथा की परम्परा सुदृढ़ एवं विकसित हुई है। हिन्दी आत्मकथा परम्परा में आज मौलिक एवं अनूदित दोनों प्रकार की आत्मकथाएँ अभिव्यक्ति पा रही है। इस युग में धार्मिक, राजनैतिक, समाज सेवी तथा क्रान्तिकारियों ने आत्मकथा विधा को पल्लवित करने ममहत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। महिला लेखिकाएँ भी अपने दुःख-दर्द के साथ इस परम्परा से बड़ी सक्रियता से जुड़ रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि जूठन (दूसरी खंड), राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, पहला संस्करण-2015
2. निर्मला जैन जमाने में हम, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, पहला संस्करण-2015
3. सं॰ धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश (भाग-1), पृ॰ 98
4. सं॰ डॉ. नगेनद्र, मानविकी पारिभाषिक कोश, साहित्यिक खंड, पृ॰ 28
5. डॉ. भगवानशरण भारद्वाज, हिन्दी जीवनी साहित्य सिद्धान्त और अध्ययन, पृ॰ 44
6. डॉ. कमलापति उपाध्याय, हिन्दी आत्मकथा साहित्य का शैलीपरक अध्ययन, पृ॰ 79
7. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ॰ 38-39
8. तुलसीदास, कवितावली, उत्तरकाण्ड, पृ॰ 146
9. अमीर तीमूर, अमीर तीमूर की आत्मकथा, पृ॰ 18
10. श्री राधाचरण गोस्वमी, मेरा संक्षिप्त जीवन चरित्र, पृ॰ 4

Corresponding Author

Mamatha Sharma*

M.A. Hindi, B.Ed., Net Qualified